भागवत - धारा



राघव किंकरी
डा० निर्मल बांगा

भागवत-धारा

विषयों में ही फंसा पड़ा है,
आज यह सारा संसार।
इन के दुःखद परिणामों पर,
करता नहीं कोई भी विचार।।
विषयाकर्षण ले डूबेगा,
यूँ ही भटकते जायेंगे।
परम लक्ष्य जो जीवन का,
उसे कभी न पायेंगे।।
अंश ईश्वर के होकर भी,
जब हम रहते उससे दूर।
हम दुःख पाते लेकिन वह
ईश्वर आनन्द से है भरपूर।।
परम प्रभु की शरण में जाकर,
वह आनन्द मिल पायेगा।
जीवन के सब तापों से,
छुटकारा स्वयं मिल जायेगा।।
निर्मल कहती प्रभु प्रेरित हो,
लिखवाई भागवत-धारा।
नित्य इसका पाठ करो,
मिल जायेगा रघुवर प्यारा।।

श्री गणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



भागवत-धारा

राघव किंकरी

डा० निर्मल बांगा

राघव प्रकाशन, सहारनपुर

© : राघव किंकरी **डा०निर्मल बांगा**

संस्करण : **प्रथम, 2018**

आवरण : विपुल मित्तल
विशेष सहयोग : आदित्य शर्मा

लेजर टाइपसैटिंग : **आकार, भगत सिंह मार्ग, सहारनपुर**

प्रकाशक : **राघव प्रकाशन,**
सहारनपुर (उ.प्र.)

मुद्रक : अनिल प्रैस, नगर, सहारनपुर

Bhagawat Dhara *by Raghav Kinkri* ***Dr. Nirmal Banga***
Rs. 70/–(Paper Back)

।। श्रीमतेरामानन्दाचार्याय नमः ।। ।। श्री राम कृष्णाभ्यांनमः ।। ।। वन्देमलूकदासार्यं द्वाराचार्यं जगद्गुरुम ।।

।। श्री सुरभ्यैनमः ।।

श्री मलूक पीठ सेवा संस्थान न्यास, वृन्दावन

श्री मलूक पीठ, वंशीवट, वृन्दावन (मथुरा) - 281121

अध्यक्ष:
जगद्गुरू द्वाराचार्य, मलूक पीठाधीश्वर
श्री राजेन्द्रदास देवाचार्य जी महाराज

फोन: 0565-6454808

दिनांक ....

।। श्री सीताराम ।।

।। श्रीहरिः शरणम् ।।

पिवत भागवतं रसमालयम्

नित्य सिद्ध अनादि अपौरूषेय वेदो के अत्यन्त गुह्य गंभीर तात्पर्य को प्रकट करने के लिये भगवान श्री हरि महामुनि श्रीकृष्ण द्वैपायन वेदव्यास जी के रूप में अवतीर्ण हुए। अल्पज्ञ ज्ञानाभिमानी वेदार्थ को विकृत न कर सकें एतदर्थ इतिहास पुराण के रूप में वेद भाष्य स्वयं ही किया। इतिहास पुराण के सारसर्वस्व को सिद्धान्त रूप में प्रस्तुत करने के लिए पुराण सम्राट श्रीमद्भागवत महापुराण को प्रकट किया।

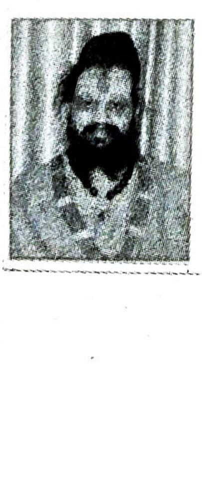
संस्कृत के विद्वान श्रीधर स्वामी प्रभृति आचार्यो ने अत्यन्त गुरूगंभीर टीकायें की। असंस्कृतज्ञ भी ताल स्वर में भाषा छन्दोबद्ध रूप में गाकर श्रीमद्भागवत रसामृत में अवगाहन कर सकें। इसी पवित्र भाव को सर्वसमर्थ श्रीरघुनाथ जी ने ..

"जेहि पर कृपा करहि जनजानी।
कवि उर अजिर नचावहि बानी।। " (रामचरितमानस)

को प्रमाणित करते हुए परम विदुषी कवयित्री भक्तिमति श्रीराघव किंकरी निर्मल ने अत्यन्त सरस सरल भाव गाम्भीर्य युक्त छन्दो में श्रीमद्भागवत रसामृत को प्रस्तुत कर साधक वैष्णव जगत का महान उपकार किया है। श्रीभुशुण्डि रामायण के समान श्रीभागवत धारा का प्रणयन कर श्रद्धावान पाठक नित्यप्रति भागवत पारायण का लाभ ले सकें यह उपकार भी किया।

भक्तिमती राघव किंकरी ने किया कार्य अनुपम रसखान।
भक्ति रसामृत सिन्धु निमज्जित किया सकल जग धन्य महान।।
नित्यपाठ भागवत ग्रन्थ का कर सुख पावैं पद निर्वाण।
इसी हेतु से मूल भागवत रस धारा वनि वही महान।।

आपको इस स्तुत्य कार्य की भूरि भूमि सराहना करता हुआ आपके हृदय में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य पुष्ट हो ऐसी प्रार्थना प्रभु चरणों में करता हुआ अपनी शुभकामना व्यक्त करता हूं।



भगवच्चरणेषुरतिर्भूयात

ज.द्वा.म. राजेन्द्रदास देवाचार्य

ज्येष्ठ शुक्ल 12 (द्वादशी) सोमवार सं 2075

एक दयाअरू दीनता लै रहिये भाई, चरण गही जाय साधु के रीझें रघुराई।



॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

श्री भक्तमाल कुञ्ज

संस्थापक : आचार्य प्रवर **श्री अजयशरण जी महाराज**

(श्रीमद्भागवत कथा, श्रीरामकथा, श्रीभक्तमाल कथा एवं श्री निताई-गौर कथा के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता)



चैतन्य विहार, बुर्जा रोड
(न्यू रंग मन्दिर के सामने)
श्रीधाम वृन्दावन-281 121

Mob. : 09219669927, 09458076266
Email : ajaysharanji28@gmail.com

शुभाकांक्षा

॥ श्रीमद्भागवताख्योयं प्रत्यक्ष कृष्ण एव हि ॥

श्रीमद्भागवत प्रत्यक्ष कृष्ण स्वरूप है। संस्कृतमय हैवे ते बड़े-बड़े विद्वानन के लिये हू अगम्य है। वाही कठिनतम रस कूँ अत्यधिक सरलतम बनायवे के ताँई श्री राधा सर्वेश्वर प्रभु की महती अनुकम्पा ते

श्री राघव किंकरी निर्मल बांगा जी नें

सर्व साधारण के ताँई सुगमतम
कर दियौ है।
जि 'भागवत धारा' मूल श्रीमद्भागवत-रस-प्रवाहिनी
के रूप में जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठित होय;
जिही श्री प्रिया प्रियतम ते प्रार्थना है।

भवदीय

आचार्य अजय शरण

आचार्य अजय शरण

आभार

संकल्प एवं प्रेरणा के लिये मेरे ठाकुर किसी एक का ही वरण करते है। पर

जापर कृपा राम की होई। तापर कृपा करे सब कोई॥

चौपाई को चरितार्थ करते हुए उस संकल्प को पूर्णता प्रदान करने हेतु बहुत से सहयोगियों को प्रभु प्रेरित कर देते है जिससे वह संकल्प कब और कैसे सिद्ध हो जाता है, पता ही नहीं चलता।

'भागवत-रसामृत' के प्रकाशित होने पर बहुत से भागवत-प्रेमी जनों की यह इच्छा थी कि भागवत का रस बहुत छोटे से प्याले में मिल जाये जिसका पान करने में ज्यादा समय न लगे क्योंकि आज सब के जीवन में बहुत अधिक व्यस्तता है। सब के मुँह से एक ही बात सुनने को मिलती है *"समय ही नहीं है।"* जैसा कि आत्म-निवेदन में मैं बता चुकी हूँ कि **'कागभुसुण्डि रामायण'** से ही भागवत-धारा की भूमिका बनी।

जब भागवत के संक्षिप्त रूप को रघुनन्दन प्रेरणा से भागवत-धारा नाम दिया गया तभी से भ्राता श्री कृष्ण लाल मिड्ढा इसके प्रकाशन हेतु चिन्ताशील रहे। अपने मित्र श्री आदित्य शर्मा जी को जब इन्होंने भागवत - रसामृत भेंट की और भागवत-धारा के विषय में भी बताया तो उन्होंने स्वत: ही इस को छपवाने का कार्य-भार अपने ऊपर ले लिया और उसको बखूबी निभाया है। अत: भ्राता श्रीकृष्ण लाल मिड्ढा एवं श्री आदित्य शर्मा जी के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। भागवत-रसामृत एवं भागवत-धारा को हर घर, हर कर में पहुँचाने की धारणा मन में लिये हुए सतत प्रयास रत, मेरे भ्राता तुल्य श्री राजेश कपूर जो एक सुप्रतिष्ठित वकील होने के साथ-साथ संत जी बावा लाल जी के अनन्य सेवक भी हैं। अपने सतगुरू श्री बावा लाल जी की वाणी के प्रचार-प्रसार में गत तीस वर्षों से निरन्तर रत है। इस हेतु कई

आयोजन करते एवं करवाते रहते हैं। मैं उनका भी सच्चे मन से आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अपने परिवार, विशेषतः पुत्र पुनीत, पुत्रवधु गीता, पौत्र राघव एवं पौत्री गौरी के स्नेहिल प्रेरक भाव के लिये भी आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रातः स्मरणीय मलूक पीठाधीश्वर श्रद्धेय राजेन्द्र दास जी की भी मैं विशेष रूप से हार्दिक आभारी हूँ। जिन्होंने अपने अत्यन्त व्यस्ततम क्षणों में भी भागवत-धारा का आद्यन्त अवलोकन किया एवं अपना शुभाशीष देकर मुझे धन्यता प्रदान की।

संत श्री अजय शरण जी का भी आभार व्यक्त करती हूँ जो भागवत-रसामृत एवं भागवत-धारा के प्रणयन में सतत प्रेरणा स्रोत बने रहे।

अपने सभी शुभ चिन्तकों की भी आभारी हूँ जिन्होंने परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से मुझे सदैव सम्बल प्रदान किया।

अन्त में उन सबके प्रति मेरा हार्दिक आभार, जिन्होंने कहीं भी किसी भी रूप में मेरा सहयोग एवं मार्गदर्शन किया।

साभार

राघव किंकरी

निर्मल बांगा





भागवत की महिमा भारी है। संतों को लगती प्यारी है।।
भागवत सिखाती भागवत धर्म। जिसमें भरा जीवन का मर्म।।
भागवत देती है वह ज्ञान।प्रभु से मिलन होता आसान।।
संतों की अमूल्य निधि है यह। प्रभु पाने की विधि है यह।।
भागवत भव तरने की तरणि है।अघ दाह करने की अरणि है।।
भागवत को जो करते श्रवण। छुट जाता उनका आवागमन।।
भागवत को जो करते प्यार। प्रभु करते उनकी सम्हार।।
भागवत को जो नित्य हैं पढ़ते। पाप और पापी उन से डरते।।
भागवत वेदों का सार है। हर प्राणी का आधार है।।
भव-जल होता जब गहरा है। भागवत का लगता पहरा है।।
होता सर्वत्र अंधकार है जब। भागवत देती उजियार है तब।।
प्रभु को पाने की जो चाह। भागवत पढ़ो सहित उत्साह।।
भागवत ज्ञान है सच्चा ज्ञान। कहते इस को महापुराण।।
भागवत में है रस ही रस। कसौटी पे चाहे तू कस।।
भागवत का ले जो भी आधार।हो जाता वह भव से पार।।
निर्मल तेरी तो यह रखवार। करले नमन तू बारम्बर।।

आत्म-निवेदन

"जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ ।
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ।।"
ऐसो को उदार जग माहीं,
बिन सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोऊ नाहीं।

तुलसी बाबा की इन पंक्तियों का आधार अनुभव है उनका ज्ञान नहीं।

परमात्मा के अनुभव-गम्य हो जाने पर मिलने वाले आनंद को ही कदाचित् संतजन, भक्तजन परमानन्द, ब्रह्मानन्द आदि पदों से विभूषित करते हैं। उनका स्वरूप क्या है, वे कैसे दिखते हैं? अनुभवी संतजन बताते हैं। उनकी छवि बड़ी मोहक है। जो देखता है वह देखता ही रह जाता है वाणी मूक हो जाती है-'*गिरा अनयन नयन बिनु बानी*'यह चौपाई चरितार्थ होती है। उस छवि का चित्रों के माध्यम से दर्शन किया है पर साक्षात्कार नहीं कर पाई। आकुलता-व्याकुलता निरंतर बनी हुई है। पर वे करुणासिंधु हैं इसका अनुभव तो जीवन में पल-पल हुआ है। वे शरणागत का योगक्षेम वहन करते हैं किंकरी ने उसका अनुभव अवश्य किया है। भागवत-रसामृत और भागवत-धारा उनकी करुणा की ही अभिव्यक्ति है। भागवत-रसामृत में श्रीभागवत महापुराण के सारे प्रसंगों को लिया गया है। भागवत-धारा मानस की कागभुशुण्डि रामायण सम प्रतीत होती है। पूज्य संत मोरारी बापू की रामकथा के विश्राम पर उनके गायक इसे अवश्य गाते हैं। वहीं से प्रेरणा पाकर भागवत-धारा की भूमिका तैयार हुई। ये दोनों रचनाएँ संतों, विप्रों के आशीर्वाद का प्रतिफल हैं। संत ओर भगवंत अपात्र को पात्र बना देते हैं। मूर्ख की जड़ता को हर लेते हैं उस के भीतर ज्ञान-सागर उंडेल देते हैं। भक्त ध्रुव भगवान की अलौकिक झांकी का दर्शन करते हैं, स्तुति करना चाहते हैं। पर शब्द नहीं हैं। पाँच वर्ष के बालक हैं। भक्त के हृदय की आकुलता कहाँ देख पाये मुरारि। व्यास जी कहते हैं कि अपना शङ्ख भक्त के कपोल को स्पर्श करा दिया। सरस्वती का सारा ज्ञान उमड़ आया। ऐसे करुणा सिंधु की इस किंकरी पर महान कृपा बरसी है। उसकी ही अभिव्यक्ति स्वरूप पहले भागवत-रसामृत और अब भागवत-धारा आपके समक्ष प्रस्तुत है।

राघव किंकरी
डा० निर्मल बांगा

।। श्री गणेशाय नमः।।　　　　　　　　　।। ॐ नमो भगवतेवासुदेवाय।।

भागवत-धारा

(पद्म पुराण में वर्णित भागवत माहात्म्य)

विश्व के सृष्टा पालन कर्ता, और करते उस का संहार।
तीन ताप के नाशक सच्चिदानंद, प्रभु को करें नमस्कार।।१।।
पैदा होते ही वन की ओर जिन्होंने किया गमन।
ऐसे व्यास के नंदन शुक मुनि के चरणों में हमारा नमन।।२।।
नैमिषारण्य में शौनक जी ने, सूत जी से यह किया निवेदन।
जो कृष्ण की भक्ति प्राप्त करादे, बताइये ऐसा कोई साधन।।३।।
सूत जी बोले शुक जी ने, परीक्षित को कराया भागवत श्रवण।
पुण्यों से यह मिलता है और, श्री कृष्ण में लग जाता है मन।।४।।
ज्यों ही कथा प्रारम्भ हुई, अमृत घट देवता ले आये।
बोले मुनिवर! कथा सुधा दो, यह अमृत राजा पी जायें।।५।।
कहाँ काँच और कहाँ मणि, शुकदेव जी ने उपहास किया।
भागवत कथा देव दुर्लभ है, जग को है यह ज्ञान दिया।।६।।
भागवत को जो पढ़ता सुनता, तत्काल मोक्ष पा जाता है।
सप्ताह विधि से श्रवण करें तो, यह भक्ति की प्रदाता है।।७।।
सनकादि सत्संग करने, एक बार विशाला पुरी आये।
देखा उदास श्री नारद जी को, पूछा क्यों हो घबराये।।८।।
नारद जी ने सनकादि को भक्ति पुत्रों की व्यथा कही।
नभ गिरा उपाय बताती सत्कर्म, जिस का मुझ को पता नहीं।।९।।
सनकादि बोले सत्कर्म तो केवल भागवत ज्ञान यज्ञ है।
उसी से ज्ञान वैराग्य के, दुःख होंगे सारे नष्ट हैं।।१०।।
हरिद्वार में आनंद घाट पे, इस ज्ञान यज्ञ का हुआ आयोजन।
देवर्षि आयोजक बने, पूर्ण करने को प्रयोजन।।११।।

कथा प्रारम्भ में सनकादि, भागवत की महिमा सुनाते हैं।
इस के श्रवण मात्र से ही, हरि हृदय में आ जाते हैं।।१२।।
श्री शुक जी ने भागवत सुनाकर, परीक्षित का किया उद्धार है।
इसमें बारह स्कन्ध और, श्लोक अठारह हजार हैं।।१३।।
इस शुकशास्त्र की महिमा बड़ी है, इस से जो फल मिलता है।
बड़े से बड़ा तीर्थ यज्ञ आदि, समता न कर सकता है।।१४।।
करोड़ों जन्मों के पुण्यों से, श्री भागवत कथा का मिलता श्रवण।
इस की महिमा है बड़ी भारी, नहीं कर सकते हैं वर्णन।।१५।।
निज धाम गमन की वेला में जब प्रभु ने उद्धव को ज्ञान दिया।
तब प्रभु से उद्धव जी ने, अपनी चिन्ता का बखान किया।।१६।।
कलियुग आने वाला है, इस धरा को कौन बचायेगा।
संतों को दुष्ट सतायेंगे, भक्तों पर संकट आयेगा।।१७।।
भक्तों को सहारा देना है, प्रभु ने मन में विचार किया।
अपनी सारी शक्ति का भागवत में संचार किया।।१८।।
भागवत समुद्र में कर प्रवेश, स्वयं को कर लिया अन्तर्धान।
भागवत वाङ्मय स्वरूप प्रभु का, मुक्ति का साधन है महान।।१९।।
सनकादि ने जब सप्ताह, श्रवण की महिमा बतलाई।
पुत्रों सहित कीर्तन करती हुई, भक्ति रानी वहाँ आई।।२०।।
सनकादि भक्ति को वैष्णव हृदय में वास कराते हैं।
भक्ति के वश ही प्रभु भक्तों के हृदय में आते हैं।।२१।।
उसी समय भक्तों के प्यारे, भगवन भी वहाँ प्रकट हुए।
उनका दर्शन कर सब श्रोता, देह गेह को विसर गये।।२२।।
नारद बोले ऐसी तन्मयता का सप्ताह यज्ञ कारण।
चित्त की शुद्धि का इससे, बढ़कर नहीं कोई है साधन।।२३।।
तब पूछा हैं ऋषियों से, इसे सुनकर कौन हुआ पावन।
ऋषि बोले महापापों के, नाश का यह उत्तम साधन।।२४।।

इसी प्रसंग में ऋषियों ने आत्मदेव की कथा सुनाई है।
निःसंतान होने से जिनके, मन में निराशा छाई है।।२५।।
एक बार एक संत ने उस पर, अपनी करुणा करी महान।
पत्नि को यह खिला देना, झोले से एक फल किया प्रदान।।२६।।
पर पत्नि तो प्रसव पीड़ा के भय से मन में घबराई।
संत के दिये हुए फल को, अपनी गैया को खिला आई।।२७।।
आत्मदेव को इसके विषय में, उसने कुछ न बतलाया।
अपनी सगर्भा बहिन से उसने, पुत्र का आश्वासन पाया।।२८।।
उचित समय के आने पर, उस बहिन के बेटे को पाया।
मेरे पुत्र हुआ है पति को, संदेशा यह भिजवाया।।२९।।
सूचना पाकर आत्मदेव के, मन में थी हुई खुशी महान।
पर यह नहीं है आत्मज उसका, इस रहस्य से था अनजान।।३०।।
माँ धुंधुली ने इस बेटे को, धुन्धुकारी नाम दिया।
धुन्धुकारी ने बचपन से, ही सबको परेशान किया।।३१।।
गाय वत्स था नर का रूप, केवल गाय जैसे कान।
संत कृपा का फल था वह, हुआ शीलवान विद्वान महान।।३२।।
गायवत्स गोकर्ण सदा, प्रभु की भक्ति में रहते लीन।
धुन्धुकारी ने आत्मदेव से, ली उनकी संपत्ति छीन।।३३।।
एक दिन पिता आत्मदेव को, धुन्धुकारी ने मारी लात।
इस घटना से आत्मदेव के, मन को पहुँचा बहुत आघात।।३४।।
गोकर्ण बोले जग है झूठा, प्रभु से अब नाता जोड़ो।
वन में जाकर पढ़ो भागवत, राग द्वेष को अब छोड़ो।।३५।।
उस के कहने से आत्मदेव ने, वन की ओर किया प्रस्थान।
श्रीभागवत के ही पाठ, से कर लिया अपना कल्याण।।३६।।
धुंधुली भी बेटे से दुःखी हो, कुएँ में एक दिन कूद गई।
धुन्धुकारी हो गया स्वच्छन्द, उसको सारी छूट हुई।।३७।।

पाँच वेश्याओं पर मोहित होकर, उनको घर में ले आया।
उन्होंनें कर दी इसकी हत्या, धन पर था मन ललचाया।।३८।।
धुन्धुकारी अब प्रेत बना, गोकर्ण से उसने विनती की।
इस योनि से मुझे छुड़ाओ, मैनें बहुत है गलती की।।३९।।
सूर्यदेव ने गोकर्ण जी को, उद्धार का मार्ग बतलाया।
भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ ही, उत्तम साधन समझाया।।४0।।
वक्ता बनकर भागवत सप्ताह, ज्ञान यज्ञ का किया आयोजन।
सात गाँठ के बाँस में आकर, धुन्धुकारी ने किया श्रवण।।४१।।
दत्तचित्त हो कथा सुनी है, सात दिनों में हुआ कल्याण।
प्रभु के धाम में ले जाने को, पार्षद आये लेके विमान।।४२।।
योगाभ्यास और घोर तपस्या, से जो गति है अति दुर्लभ।
भागवत कथा सप्ताह श्रवण से, वह हो जाती सहज सुलभ।।४३।।
सनकादि ऋषियों ने ज्यों ही, भागवत कथा को विराम दिया।
श्री शुकदेव जी वहाँ पधारे, सब ने उन्हें प्रणाम किया।।४४।।
श्री शुक बोले भागवत में तो, रस ही भरा लबालब है।
न है गुठली न है छिलका, बस इसी लोक में यह सुलभ है।।४५।।
इसीलिये हे भावुक रसिको, सदा ही इसका पान करो।
भक्ति भाव से श्रवण करो, और अपना कल्याण करो।।४६।।



प्रथम स्कन्ध

प्रथम स्कन्ध के प्रारम्भ में, प्रभु की महिमा का किया है गान।
स्वयं प्रकाशित सत्य रूप, परमात्मा का किया है ध्यान।।१।।
नैमिषारण्य में शौनकादि ने, महान यज्ञ अनुष्ठान किया।
सूत जी को आसन पे बिठाकर, पूजन और सम्मान किया।।२।।
ऋषि बोले हे सूत जी हम को, कल्याण का साधन बतलाइये।
चित्त शुद्धि करने वाले, शास्त्रों का सार भी समझाइये।।३।।
प्रभु लेते हैं क्यों अवतार, सभी अवतारों का करें वर्णन।
श्री कृष्ण पधारे जब निज धाम, तो धर्म ने ली तब किसकी शरण।।४।।
श्री सूत जी ने ऋषियों के, प्रश्नों का किया अभिनन्दन।
श्री शुक जी को नमन करके, सूत जी ने किया मंगलाचरण।।५।।
सूत जी बोले हे ऋषियों, सावधान हो करें श्रवण।
नित्य निरन्तर प्रभु का ही करें, कीर्तन ध्यान आराधन।।६।।
सूत जी बोले सुनो ऋषियों, हरि ने लिये अनन्त अवतार।
पर मुख्य रूप से चौबीस, अवतारों का ही है हुआ प्रचार।।७।।
श्रीभागवत में इन सब, अवतारों का है हुआ वर्णन।
श्री शुक जी ने परीक्षित को, कराया था भागवत का श्रवण।।८।।
श्रीभागवत में भगवान की, लीलाओं का है कीर्तन।
नारद जी की प्ररेणा से, व्यास जी ने किया इसका रचन।।९।।
परमहंसों की संहिता है यह, जो भी करता इस का श्रवण।
वह श्रीकृष्ण की परम प्रेममयी, भक्ति में हो जाता मगन।।१०।।
अब मैं परीक्षित के जन्मादि, की वो कथाएँ सुनाता हूँ।
जिनसे कृष्ण कथाएँ प्रकट, होंगी सब तुम्हें बताता हूँ।।११।।
महाभारत युद्ध की इति हुई, दुर्योधन था मरणासन्न।
पाण्डुपुत्रों को मारने का, अश्वत्थामा ने दिया आश्वासन।।१२।।

पर पाण्डुपुत्रों के बदले, उनके पुत्रों को मार दिया।
दुर्योधन भी दुःखी हुआ, और द्रौपदी ने चीत्कार किया।।१३।।
बच्चों का हत्यारा है, अर्जुन ने वध की ठानी है।
पर गुरुपुत्र की हत्या के लिये, देवी द्रौपदी न मानी है।।१४।।
हाथ जोड़ कर विनती की है, स्वामी! इसे नहीं मारो।
इस की माता गौतमी को, दुःख सागर में न डारो।।१५।।
अपमानित कर छोड़ दिया, पर शठ शठता न तजता है।
छोड़ दिया ब्रह्मास्त्र वहाँ जहाँ, बीज पाण्डुवंश का पलता है।।१६।।
श्री कृष्ण ने उत्तरा को, ब्रह्मास्त्र की ज्वाला से त्राण दिया।
युधिष्ठिर आदि सब को लेकर, भीष्म के पास प्रस्थान किया।।१७।।
श्री कृष्ण को सामने पाकर, भीष्म पितामह हर्षाये।
शरशय्या पर लेटे हुए हैं, आँखों में आँसू भर आये।।१८।।
ज्ञान दिया है युधिष्ठिर को, और श्री कृष्ण की स्तुति करी।
श्री कृष्ण की छवि को निहारा, जिसने उनकी मति हरी।।१९।।
उन के सामने प्राण तजे हैं, परम गति को पाया है।
युधिष्ठिर ने अन्तयेष्ठि क्रिया कर, अपना फर्ज निभाया है।।२०।।
हस्तिनापुर में आकर प्रभु ने, सब को धीर बंधाया है।
सब का शोक मिटाने को, वहाँ काफी समय बिताया है।।२१।।
एक दिन सब से अनुमति लेकर, द्वारका के लिये तैयार हुए।
यथायोग्य आलिङ्गन नमन कर, रथ पर प्रभु हैं सवार हुए।।२२।।
ढोल नगाड़े बजने लगे, प्रेम भाव से विदा किया।
राह में उनको जगह जगह, धनी मानियों ने सम्मान दिया।।२३।।
सूत जी कहते पहुँच द्वारका, श्री कृष्ण ने शङ्ख बजाया है।
सूचना प्रभु के आने की सुन, सब का मन हरषाया है।।२४।।
सब से पहले प्रभु ने अपने, मात-पिता को प्रणाम किया।

फिर रानियों का संग पाकर, अपने परिवार को प्यार दिया।।२५।।
सूत जी शौनकादि ऋषियों को, अब आगे की कथा सुनाते हैं।
पाण्डु के वंशधर परीक्षित का, जन्म हुआ यह बताते हैं।।२६।।
अर्जुन श्री कृष्ण का कुशल, क्षेम जानना चाहते हैं।
इसीलिये स्वजनों से मिलने, वे द्वारका में जाते हैं।।२७।।
कई महीनें बीत गये, जब अर्जुन लौट के न आये।
अपशकुनों से चिन्तित हुए, युधिष्ठिर मन में घबराये।।२८।।
उसी समय देखा सबने, अर्जुन लौट के आया है।
आँखों में अश्रू की धारा, चेहरे पे तेज न पाया है।।२९।।
श्री कृष्ण गोलोक सिधारे, उसने सब को बताया है।
मदिरा से उन्मत्त हुए, यदुवंश ने नाश को पाया है।।३०।।
स्वधाम गमन का सुनते ही, कुन्ती ने प्राणों को त्याग दिया।
पाण्डव भी वियोग न सह पाये, स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया।।३१।।
शासन करने लगे परीक्षित, इरावती से विवाह किया।
उससे जनमेजय आदि, चार पुत्रों को प्राप्त किया।।३२।।
गाय बैल के जोड़े पर जब, एक पुरुष कर रहा प्रहार।
परीक्षित ने तब धनुष उठाया, उसे दण्ड देने का करके विचार।।३३।।
पुरुष रूप में वह था कलियुग, परीक्षित को शीश झुकाया है।
अपने रहने के लिये उसने, चार जगह को पाया है।।३४।।
मदिरा जुआ व्यभिचार व हिंसा, पाँचवा स्वर्ण भी पाया है।
सब से पहले राजा पर ही, अपना प्रभाव दिखाया है।।३५।।
शिकार खेलने हेतु गये, राजा से अपराध महान हुआ।
समाधि में बैठे शमीक ऋषि का, उनके द्वारा अपमान हुआ।।३६।।
उनके बेटे शृङ्गी ने, जब समाचार यह पाया है।
आज से सातवें दिन तक्षक, डस लेगा शाप सुनाया है।।३७।।
राजधानी में पहुँच परीक्षित, को अपराध का बोध हुआ।

सूचना मिली जब शाप की इनको, मन में जरा न शोक हुआ।।३८।।

पहुँच गये गङ्गा के तट पर, प्रभु चरणों में ध्यान लगाया है।

संतों महात्माओं को अपने, शाप के विषय में बताया है।।३९।।

उसी समय श्री व्यास के नंदन, शुक स्वामी जी प्रकट हुए।

परीक्षित जी ने दिया है आसन, और मन में प्रसन्न हुए।।४०।।

मरणासन्न को क्या करना है, किस को भजे क्या करें श्रवण।

उत्तर देने लगे श्री शुक जी, परीक्षित ने जो पूछे प्रश्न।।४१।।



द्वितीय स्कन्ध

श्री शुक बोले सुनो परीक्षित, यदि अभय पद पाना है।
तो मृत्यु समय हरि स्मरण रहे, यह ही लक्ष्य बनाना है।।१।।
श्री कृष्ण की लीलाओं का, करो स्मरण कीर्तन व श्रवण।
श्री कृष्ण के नामों का ही, करते रहो तुम संकीर्तन।।२।।
मरणासन्न होने पर व्यक्ति, मन में न कभी घबराये।
अहंता ममता से मुक्ति, पाने के साधन अपनाये।।३।।
विष्णु भगवान के नाभि कमल से, ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए।
तप करके प्रभु दर्शन पाया, मन में अति प्रसन्न हुए।।४।।
प्रभु ने ब्रह्मा को सृष्टि, रचना का अधिकार दिया।
हाथ जोड़ कर उन्होंने प्रभु की, आज्ञा को स्वीकार किया।।५।।
सृष्टि रचना से पहले, ब्रह्मा ने प्रभु की स्तुति करी।
कर्तापन का मान न हो, ऐसी कृपा कर दो हरी।।६।।
तब प्रभु ने चतु:श्लोकी भागवत, का उनको उपदेश दिया।
मेरी ही सत्ता है केवल, जग को यह संदेश दिया।।७।।
यदि इसी सिद्धान्त को, अपने जीवन में अपनाओगे।
तो अपनी रचना से कभी भी, मोहित न हो पाओगे।।८।।
ब्रह्मा जी को ऐसा कह कर, प्रभु ने निज रूप छिपाया है।
ब्रह्मा ने इस भागवत का, नारद को श्रवण कराया है।।९।।



तृतीय स्कन्ध

प्रभु की आज्ञा से ब्रह्मा ने, कई प्रकार की सृष्टि करी।
पर उन से सृष्टि विस्तार की, परम्परा आगे नहीं बढ़ी।।१।।
मन में हुई बड़ी हैरानी, और चिन्ता उत्पन्न हुई है।
उसी समय उन की काया, दो भागों में बट गई है।।२।।
स्त्री पुरुष का जोड़ा प्रकटा, मनु शतरूपा कहलाये।
परम्परा मैथुनी सृष्टि की, मनु जी ही जग में लाये।।३।।
हाथ जोड़ कर स्वायम्भुव मनु, ब्रह्मा जी के सन्मुख आये।
बोले क्या सेवा करें आपकी, जिससे जग में यश पायें।।४।।
अपने जैसी गुणवती सन्तति, से सारा यह जग भर दो।
यज्ञों से करके हरि आराधना, उन को तुम प्रसन्न कर लो।।५।।
पृथ्वी प्रलय जल में डूबी है, मनु जी ने चिंता जताई है।
तब ब्रह्मा के नासाछिद्र से, एक आकृति सामने आई है।।६।।
वराह रूप के उस आकार ने, विशाल रूप को धार लिया।
जल के भीतर कर प्रवेश, पृथ्वी का उद्धार किया।।७।।
इसी वराह अवतार में प्रभु ने, हिरण्याक्ष का संहार किया।
अधर्म बोझ से दबी हुई, पृथ्वी का कम है भार किया।।८।।
पाँच संतानें हुई मनु की, दो पुत्र तीन कन्यायें।
इनकी संतति से ही सारा, विश्व भरा हुआ हम पायें।।९।।
अब श्री शुक जी परीक्षित को, मनु का वंश बताते हैं।
सबसे पहले पुत्री देवहूति का चरित्र सुनाते हैं।।१०।।
कर्दम ऋषि के तप से खुश हो प्रभु उन्हें दर्शन देते हैं।
देवहूति से करो तुम शादी, वचन यह उनसे लेते हैं।।११।।
मैं पुत्र रूप में आऊँगा, यह भी उन्हें वरदान दिया।
कर्दम जी बिन्दुसर ही रहे, प्रभु ने है प्रस्थान किया।।१२।।

प्रभु संकेतित उचित समय पर, मनु जी वहाँ पर आते हैं।
रानी शतरूपा पुत्री, देवहूति भी संग में लाते हैं।।१३।।
कर्दम ऋषि ने उन सबका, उचित आदर सत्कार किया।
ब्राह्म विधि से पत्नि रूप में, देवहूति को स्वीकार लिया।।१४।।
देवहूति से कर्दम जी ने, नौ कन्यायों को पाया है।
जिनका विवाह मरीचि आदि, प्रजापतियों से कराया है।।१५।।
प्रभु ने जो वरदान दिया था, उसको पूर्ण निभाया है।
पुत्र कपिल के रूप में कर्दम जी ने उन्हें ही पाया है।।१६।।
भगवान कपिल की अनुमति से सन्यास मार्ग पर जाते हैं।
समबुद्धि से युक्त हो कर के, प्रभु का परम पद पाते हैं।।१७।।
उन की माता देवहूति भी, एक दिन उन की शरण आयीं।
बोली 'मैं' 'मेरे' के कारण, मोह को दूर न कर पायी।।१८।।
भगवान कपिल ने माता को, भक्ति का स्वरूप बताया है।
संतों की संगत से प्राणी, मोह से मुक्त हो पाया है।।१९।।
विषय ही बंधन के कारण हैं, इनके मोह को अब छोड़ो।
श्रवण करो हरि लीला कथाएँ, हर पल हरि से चित्त जोड़ो।।२०।।
दूर हुआ अज्ञान कपिल प्रभु ने ऐसा है ज्ञान दिया।
उन के बताये मार्ग पे चलकर श्री भगवान को प्राप्त किया।।२१।।



चतुर्थ स्कन्ध

मनुनन्दिनी आकूति का रुचि प्रजापति से विवाह हुआ।
यज्ञ और दक्षिणा को पुत्र, पुत्री के रूप में प्राप्त किया।।१।।
दक्ष प्रजापति ने मनु पुत्री प्रसूति का पाणिग्रहण किया।
इनकी ही एक पुत्री सती का, शङ्कर जी ने वरण किया।।२।।
वैर के कारण दक्ष प्रजापति, ने शङ्कर का अपमान किया।
यज्ञ में शामिल होने आई, सती को न सम्मान दिया।।३।।
क्रोध में भर कर उसी यज्ञ में, सती ने देह को त्याग दिया।
हिमाचल की पुत्री बनकर, पुनः शङ्कर से विवाह किया।।४।।
स्वायम्भुव मनु के दो बेटे, प्रियव्रत और उत्तानपाद।
उत्तानपाद की दो पत्नियाँ, सुरुचि सुनीति उनके नाम।।५।।
सौतेली माँ सुरुचि के, कटु वचनों ने ध्रुव को आघात दिया।
सुनीति माँ के कहने से, ध्रुव ने वन में प्रस्थान किया।।६।।
प्रभु की गोद को पाना है, मन में यह संकल्प लिया।
देवर्षि नारद ने उनके, इस संकल्प को पुष्ट किया।।७।।
'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय', मंत्र जपने को बताया है।
जिसके जाप से केवल छः माह, में ही प्रभु को पाया है।।८।।
पाँच वर्ष के बालक ध्रुव ने, इतनी कठिन तपस्या करी।
गरुड़ पे बैठ के दर्शन देने आये ध्रुव को स्वयं हरी।।९।।
सामने अपने प्रभु को पाकर, ध्रुव का मन हर्षाया है।
प्रभु की छवि निहारते रहे, पर बोल निकल न पाया है।।१०।।
प्रभु के शङ्ख का स्पर्श पाते ही, वेद वाणी को पाया है।
भक्ति भाव से भर कर ध्रुव ने, प्रभु की स्तुति को गाया है।।११।।
छत्तीस हजार वर्ष राज्य, करने का उसे वरदान दिया।
कभी नष्ट न होने वाला, ध्रुव लोक भी उसे प्रदान किया।।१२।।

प्रभु जी अपने लोक गये, तब ध्रुव जी वापिस आये हैं।
राजा रानी माता सुनीति देख उन्हें हर्षायें हैं।।१३।।
वृद्धावस्था जान के अपनी, पिता ने उनको राज्य दिया।
यक्षों ने भाई को मारा तो, यक्षों का संहार किया।।१४।।
पुत्र उत्कच को राज्य देकर, बदरिका आश्रम प्रस्थान किया।
वहाँ मन के द्वारा श्री हरि के, विराट् स्वरूप का ध्यान किया।।१५।।
एक दिन देखा ध्रुव जी ने, सुन्दर विमान एक आया है।
उस विमान में बैठ उन्होंने, हरि के धाम को पाया है।।१६।।
शुक जी कहते सुनो परीक्षित, इसी वंश में राजा अङ्ग हुए।
पुत्र बेन से दुःखी होकर के, नगर छोड़ कर चले गए।।१७।।
बहुत ढूँढने पर भी प्रजा ने, जब उनको नहीं पाया है।
अराजकता न फैल जाये, बेन को राजा बनाया है।।१८।।
राज्य सिंहासन पाकर बेन ने, संतों ब्राह्मणों का अपमान किया।
मुनियों ने की है विनती, पर उसने नहीं ध्यान दिया।।१९।।
क्रोधित होकर मुनियों ने, हुंकारों से उस को मार दिया।
राजा अङ्ग का वंश चले, इस पर भी उन्होंने विचार किया।।२०।।
तब विप्रों ने राजा बेन की, दोनों भुजाओं का मंथन किया।
उन भुजाओं से स्त्री पुरुष, का एक जोड़ा प्रकट हुआ।।२१।।
पुरुष पृथु हैं स्त्री अर्चि है, पृथु ही अब सम्राट हुए।
धरती ने जब अन्न छिपाया, तब पृथु उस पे नाराज हुए।।२२।।
क्रोधित होकर राजा पृथु ने, धनुष पे बाण चढ़ाया है।
धरती बोली चोरों के डर से, मैंने अन्न छिपाया है।।२३।।
राजन! बछड़े और पात्र लें, मेरा दोहन कर लें आप।
भीतर आर्द्रता बनी रहे, मुझ को समतल कर दें आप।।२४।।
शुक जी कहते राजा परीक्षित, तब राजा ने ऐसा ही किया।
फिर सौ अश्वमेध यज्ञों को, करने का संकल्प लिया।।२५।।

अन्तिम यज्ञ के घोड़े को, देवराज ने चुराया है।
ऋत्विजों ने मंत्रों से बुलाकर, हत्या का विचार बनाया है।।२६।।
आहुति देने वाले ही थे, ब्रह्मा जी ने रुकवाया है।
उसी समय भगवान विष्णु , का भी दर्शन पाया है।।२७।।
अति प्रसन्न हो भगवन बोले, सनकादि तुम्हें देंगे दर्शन।
दस हजार उन्हें कान दिये हैं, लीला कथा करने को श्रवण।।२८।।
राजा पृथु प्रभु विष्णु के, अवतार कहलाये जाते हैं।
अंत में करके कठिन तपस्या, परम धाम को पाते हैं।।२९।।
इन्हीं की वंश परम्परा में, प्रचेताओं ने जन्म लिया।
भगवान रुद्र का दर्शन पाकर, जीवन अपना धन्य किया।।३०।।



पंचम स्कन्ध

शुक जी बोले मनुनंदन, प्रियव्रत प्रभु भक्ति में रहते।
हे राजन! वो अनासक्त रह, पृथ्वी पर शासन करते।।१।।
एक बार प्रियव्रत ने देखा, सूर्य परिक्रमा जब करते।
आधे में रहता अंधेरा, और आधे को प्रकाशित करते।।२।।
जहाँ प्रकाश वहाँ दिन होता, जहाँ अंधेरा कहलाती रात।
सर्वत्र प्रकाश फैलाऊँगा, ऐसी मन में आई बात।।३।।
रथ पर चढ़े चढ़े राजा ने, पृथ्वी की सात परिक्रमा करी।
वे ही सात समुद्र हुए, जो रथ के पहियों से लीकें बनी।।४।।
इन्हीं समुद्रों से पृथ्वी पर, राजन! बन गये द्वीप हैं सात।
शुक जी कहते जहाँ हम रहते, जम्बू द्वीप तू इस को जान।।५।।
निश्चित कर दी प्रत्येक द्वीप की, नदी पर्वत वन की सीमा।
उन के लिये लौकिक ऐश्वर्य, की नहीं थी कुछ भी महिमा।।६।।
नृप प्रियव्रत के पौत्र नाभि को, हुई न जब कोई संतान।
यज्ञपुरुष का यजन किया, प्रभु ने करुणा करी महान।।७।।
चतुर्भुज रूप में होके प्रकट, प्रभु ने उन्हें दिये दर्शन।
ऋत्विजों ने पूजा की प्रभु की, और चरणों में किया नमन।।८।।
अपने यजमान राजर्षि, नाभि के लिये की है विनती।
अपने जैसा ही पुत्र उन्हें, देने के लिये करी है स्तुति।।९।।
प्रभु बोले ऐसा वर मांग के असमंजस में डाला है।
पर अपने भक्तों की बात को, मैंने न कभी टाला है।।१०।।
अपनी अंशकला से मैं ही, नाभि के यहाँ लूँगा अवतार।
यह कह अन्तर्धान हुए हरि, सब को मिला आंनद अपार।।११।।
नाभिनंदन ऋषभ देव, विष्णु अवतार कहे जाते।
इन्द्र की कन्या जयन्ती से, करके विवाह शोभा पाते।।१२।।

ऋषभ देव जी जयन्ती से, सौ पुत्रों को पाते हैं।
शुक स्वामी सब से बड़े बेटे, भरत का चरित सुनाते हैं।।१३।।
एक करोड़ वर्ष तक भरत ने, इस पृथ्वी पर किया शासन।
फिर सब तज पहुँचे पुलहाश्रम, करने लगे हरि आराधन।।१४।।
एक बार सिंह से डरकर, हरिणी ने प्राण गवाये हैं।
करके दया उस के शावक पर, आश्रम में भरत जी लाये हैं।।१५।।
उसमें बढ़ गई इतनी प्रीति, छूटे पूजा पाठ और ध्यान।
एक दिन वो वापिस न आया, याद में उसकी छोड़े प्राण।।१६।।
अन्तकाल में मृग की याद थी, मृग शरीर को पाया है।
पूर्व जन्म की स्मृति उन्हें थी, वैराग्य भाव जग आया है।।१७।।
भोग के अपने प्रारब्ध को, मृग योनि से छूट गये।
अब एक ब्राह्मण के कुल में, पुत्र रूप में उत्पन्न हुये।।१८।।
पूर्व जन्म के स्मरण के कारण, हरि में ध्यान लगाया है।
दूसरों की दृष्टि में स्वयं को, पागल बहरा बनाया है।।१९।।
इसीलिये लोगों में वो, जड़ भरत नाम को पाते हैं।
एक दस्यू के सेवक उनको, बलि के लिये ले जाते हैं।।२०।।
बलि देने के लिये दस्यू जब माँ के सामने लाया है।
माँ काली ने होके प्रकट, भक्त भरत को बचाया है।।२१।।
रहूगण राजा की पालकी में, बन कहार उपदेश किया।
सत्संग है कल्याण का साधन, जग को यह संदेश दिया।।२२।।
शुकदेवजी कहते सुनो परीक्षित, सब वर्षो में उत्तम भारत।
हरि का भजन करें यहाँ रहकर, देव भी रखते यह चाहत।।२३।।
पचास करोड़ योजन सारे, भूगोल का बतलाया विस्तार।
सात द्वीप सागर और वन नदी, पर्वत इसमें बड़े अपार।।२४।।
फिर शुक स्वामी ने राजा को, नरकों के विषय में बताया है।
अच्छे बुरे कर्मो से ही स्वर्ग नरक को पाया है।।

षष्ठ स्कन्ध

परीक्षित बोले हे मुनिवर!, कोई ऐसा उपाय बतलाइये।
नरक यातना से बच जायें, कल्याण का साधन समझाइये।।१।।
पापों का प्रायश्चित कर प्राणी, नरक त्रास से बच जाता।
यदि दोबारा वो पाप दोहरायें, फिर मुक्ति को नहीं पाता।।२।।
राजन! तत्त्वज्ञान को ही, सच्चा प्रायश्चित बतलाया है।
इस संदर्भ में विप्र अजामिल, का उपाख्यान सुनाया है।।३।।
कान्य.कुब्ज में रहने वाला, हरि भक्ति में रहता तन्मय।
मात–पिता का आज्ञाकारी, प्रभु का ही लेता आश्रय।।४।।
पर काम विकार बढ़ाने वाले, दृश्य पर जब नजर पड़ी।
वह तो काम में अंधा हो गया, काम ने उसकी मति हरी।।५।।
उस वेश्या पर मोहित होके, उसको अपने घर लाया।
शीलवती पत्नी को त्यागा, सब धन उस पर बरसाया।।६।।
उस वेश्या की ही इच्छाओं को, पूरा करने में लगा रहता।
उस के बेटे नारायण को, वह तो प्यार बहुत करता।।७।।
नारायण को इक पल भी, आँखों से दूर कभी न करा।
मौत सिरहाने खड़ी है मेरे, यह भी न उसे पता पड़ा।।८।।
यम के भयावनें दूतों से डर, नारायण को पुकारा है।
नारायण के पार्षद आ गये, प्रभु! यह भक्त तुम्हारा है।।९।।
यमदूतों के फन्दे से, विप्र को मुक्त कराया है।
यम के दूत हुए क्रोधित, यमराज को जाके बताया है।।१०।।
यह सब सुन यमराजा बोले, दूतों! तुम्हें यह कहना है।
अन्त समय नारायण कहने, वालों से दूर तुम्हें रहना है।।११।।
जो नहीं भजता कभी हरि को, उसको ही यहाँ तुम लाना।
पापों में जो रहता लिप्त, दण्ड उन को दिलवाना।।१२।।

ऐश्वर्य मद से मतवाले, इन्द्र ने गुरु अपमान किया।
ऋषि दुर्वासा की प्रसादी, माला को न सम्मान दिया।।१३।।
इस कारण से देवराज को, असुरों से मिलती हार है।
तब विश्वरूप ने उनके पुरोहित, पद को किया स्वीकार है।।१४।।
विश्वरूप ने देवराज को, नारायण कवच बताया है।
जिससे रक्षित होकर इन्द्र ने, खोया वैभव पाया है।।१५।।
विश्वरूप ने इस अनुष्ठान में, असुरों को भी भाग दिया।
जिस से क्रोधित होकर इन्द्र ने, विश्वरूप का संहार किया।।१६।।
इन्द्र ने इस ब्रह्म हत्या को, चार भागों में बाँट दिया।
पृथ्वी जल वृक्ष स्त्रियों को, इस हत्या को प्रदान किया।।१७।।
विश्वरूप की मृत्यु का जब, पिता त्वष्टा को पता पड़ा।
उन्होंने यज्ञ से इन्द्र को मारने वाला दैत्य पैदा करा।।१८।।
वृत्रासुर नाम के इस दैत्य ने, देवों से सब कुछ छीना।
हरि की आज्ञा से देवों ने, दधीचि का वंदन कीना।।१९।।
दधीचि ऋषि ने शरीर की अस्थियाँ, देवों को प्रदान करी।
विश्वकर्मा ने बनाया वज्र, देवों में फिर से उमंग भरी।।२०।।
इसी वज्र से देवराज ने, वृत्रासुर को मार दिया।
उसकी ज्योति समाई प्रभु में, परम धाम को प्राप्त किया।।२१।।
ऐसा अद्‌भुत दृश्य देखकर, राजा परीक्षित हुए हैरान।
तब शुक स्वामी जी ने किया, उन के इस संदेह का निदान।।२२।।
पूर्व जन्म में थे विद्याधर, शिव पार्वती का किया उपहास।
शिव जी तो रहे मौन परन्तु, पार्वती ने दे दिया शाप।।२३।।
उसी शाप के कारण असुर, योनि को इन्होंने पाया है।
अन्यथा इन के रोम रोम में, प्रभु का प्रेम समाया है।।२४।।

सप्तम स्कन्ध

श्री शुकदेव परीक्षित को, प्रह्लाद का चरित सुनाते हैं।
खम्भे से नृसिंह प्रभु प्रकटे, विश्वास की महिमा बताते हैं।।१।।
कश्यप दिति के थे दो बेटे, हिरण्यकशिपु और हिरणायक्ष।
प्रभु ने वराह अवतार धार के, हिरण्याक्ष का किया संहार।।२।।
इसीलिये हिरण्यकशिपु , विष्णु को वैरी मानते हैं।
कठोर तपस्या कर के ब्रह्मा से अद्‌भुत वर मांगते हैं।।३।।
पत्नि इन की सगर्भा थी, जब यह तप करने को गये।
नारद जी का आश्रय पाकर, यह बालक प्रभु के भक्त हुये।।४।।
प्रह्लाद नाम इस बालक का, हर समय प्रभु चिंतन करते।
हिरण्यकशिपु प्रह्लाद के लिये, मन में न प्रेम भाव रखते।।५।।
असुर बालकों को भी प्रह्लाद ने, भक्ति के रंग में रंग डाला।
शिक्षक भी दुविधा में पड़ गये, किस से पड़ गया है पाला।।६।।
यह विष्णु का वैरी बने, पिता ने बहुत प्रयास किये।
जब वे सफल नहीं हो पाये, तो मन में बहुत उदास हुए।।७।।
आखिर उस को मारने का, मन में अपने निश्चय किया।
पर्वत से गिराया समुद्र में डाला, भोजन में उसे विष भी दिया।।८।।
पर रक्षा करते जिस की मुरारि, उस का न होता बांका बाल।
मृत्यु से उस की रक्षा करने, नृसिंह प्रभु प्रकटे खंभा फाड़।।९।।
अमर होने के अद्‌भुत वर भी, दैत्य की रक्षा न कर पाये।
अद्‌भुत युक्ति से प्रभु ने मारा, देवता सब अति हर्षाये।।१०।।
नृसिंह प्रभु ने भक्त प्रह्लाद को, गोद में ले के प्यार किया।
कामना का अंकुर न उपजे, प्रभु से यह वरदान लिया।।११।।
शुकदेव जी कहते जो गृहस्थी, संतों की सेवा करते हैं।
प्रभु की भक्ति उन को मिलती, भव सागर सहज में तरते हैं।।१२।।

अष्टम स्कन्ध

स्वायम्भुव मन्वन्तर का वर्णन, सविस्तार सुनाया है।
दूसरे मनु स्वारोचिष तीसरे, के उत्तम को बताया है।।१।।
चौथे मन्वन्तर के मनु तामस, शुक जी यह बतलाते हैं।
हरि के रूप में ले अवतार, प्रभु गज को ग्राह से बचाते हैं।।२।।
ग्राह का पहले उद्धार किया, हरि यह संदेश सुनाते हैं।
मेरे दासों के भी दास, पहले पार हो जाते हैं।।३।।
पाँचवे रैवत छठे चाक्षुष में, हरि अजित नाम से आते हैं।
कूर्म रूप को धारण कर के, सागर मंथन करवाते हैं।।४।।
सागर मंथन से निकला विष, शंकर को पान कराते हैं।
अन्य सारी विभूतियों को, दैत्य देव मिल पाते हैं।।५।।
अब भगवती लक्ष्मी प्रकट हुई, हाथों में कमलों की माला।
उस माला को जगतपति, विष्णु के गले में है डाला।।६।।
फिर प्रकटे धन्वन्तरि जी, जो अमृत घट लाये हैं।
दैत्य छीन के भागे तब, प्रभु मोहिनी रूप में आये हैं।।७।।
दैत्यों से ले अमृत घट, ऐसा जादू चलाया है।
दैत्य उनको रहे निहारते, देवों ने अमृत पाया है।।८।।
एक ही समय एक ही स्थान, एक ही कर्म और प्रयोजन।
पर फल में बड़ा भेद हो गया, कैसा अद्‌भुत आयोजन।।९।।
दैत्य प्रभु से विमुख रहे, परिश्रम व्यर्थ गंवाया है।
प्रभु की शरण में रहने से, देवों ने कृपा को पाया है।।१०।।
देवासुर संग्राम हुआ, दैत्यराज बलि हुए मरणासन्न।
अपने यश को बढ़ता देख, सारे देवता हुए प्रसन्न।।११।।
असुर गुरु शुक्राचार्य, संजीवनी विद्या जानते हैं।
उससे राजा बलि समेत, सब मृत असुरों को जिलाते हैं।।१२।।
परीक्षित! शिव जी प्रभु के सब, रूपों के दर्शन करते हैं।

मोहिनी रूप की छवि निहार, सुध बुध भी अपनी विसरते हैं।।१३।।
सातवें मन्वन्तर के मनु , श्राद्धदेव कहलाते हैं।
इस मन्वन्तर में ही विष्णु , वामन रूप में आते हैं।।१४।।
जब श्री शुक्राचार्य ने, बलि को जीवन दान दिया।
तब से बलि ने उनकी सेवा को, सर्वस्व अपना मान लिया।।१५।।
भृगुवंशी विप्रों ने बलि से, विश्वजित यज्ञ करवाया है।
जिससे शक्ति पाकर के, देवों को स्वर्ग से भगाया है।।१६।।
देवों की माता अदिति ने, पयोव्रत का अनुष्ठान किया।
जिससे हुए प्रसन्न प्रभु , देवि अदिति को वरदान दिया।।१७।।
पुत्रों के लिये तुम चिंतित हो, मैं पुत्र रूप में आऊँगा।
दैत्यों ने जो उनका छीना, वह सब उन्हें दिलाऊँगा।।१८।।
भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की, द्वादशी की शुभ घड़ी आयी।
वामन प्रभु ने जन्म लिया, माँ अदिति अति हर्षायी।।१९।।
पिताश्री महर्षि कश्यप ने, उपनयन संस्कार कराया है।
जिसमें वामन प्रभु ने देवों से, अद्‌भुत भिक्षा को पाया है।।२०।।
उसी ब्रह्मचारी वेष में ही, वामन प्रभु बलि के पास गये।
उन के मनोरम रूप को देख के, राजा बलि कृतार्थ हुए।।२१।।
वामन प्रभु ने राजा बलि के, दानी कुल को सराहा है।
अपने तीन पगों से नापी, हुई पृथ्वी को चाहा है।।२२।।
यह साधारण याचक नहीं, शुक्राचार्य जान गये।
राजा बलि को छलने आये, विष्णु को पहचान गये।।२३।।
इस को भूमि दान न देना, राजा बलि से कहते हैं।
पर राजा बलि अपनी सत्य, प्रतिज्ञा पूरी करते हैं।।२४।।
विराट् रूप से दो पग में, दो लोकों को नाप लिया।
तीसरा पग मैं कहाँ रखूँ, बलि ने अपना आप दिया।।२५।।

बलि को छलने आये थे प्रभु, स्वयं बलि से छले गये।
तब से प्रभु राजा बलि के, द्वारपाल हैं बने हुए।।२६।।
राजा बलि से लेकर स्वर्ग, उसे सुतल लोक प्रदान किया।
त्रिलोकी का राज्य सौंप कर, इन्द्र का है कल्याण किया।।२७।।
अब श्री शुक जी प्रभु के मत्स्यावतार की लीला सुनाते हैं।
मत्स्य रूप क्यों धारा प्रभु ने, परीक्षित को यह बताते हैं।।२८।।
प्रलय काल में जब ब्रह्मा को, नींद का झोंका आया है।
हयग्रीव दैत्य ने उनके मुख से, निकले वेदों को चुराया है।।२९।।
इसी अवतार में सत्यव्रत को, आत्मतत्त्व का ज्ञान दिया।
हयग्रीव मार के वेदों को, ब्रह्मा जी को प्रदान किया।।३०।।



नवम स्कन्ध

सातवें मन्वन्तर में सत्यव्रत ही मनु पद पाते हैं।
विवस्वान के पुत्र रुप में, श्राद्धदेव कहलाते हैं।।१।।
श्री शुक ने इनके प्रपौत्र, अम्बरीष का चरित सुनाया है।
जिनका कर अपराध दुर्वासा ने कहीं ठौर न पाया है।।२।।
अन्त में आकर अम्बरीष के, चरणों में शीश झुकाया है।
तभी सुदर्शन चक्र की ज्वाला से मुक्ति को पाया है।।३।।
इसी वंश में मान्धाता, हरिश्चन्द्र और राजा सगर हुए।
जिनके पुत्र कपिल मुनि की, अपमानाग्नि में भस्म हुए।।४।।
मुनि ने उद्धार का कहा उपाय, जब अंशुमान ने की विनती।
गंगा के स्पर्श को पाके तुम्हारे, चाचाओं की होगी गति।।५।।
अंशुमान के पौत्र भगीरथ ने किया पूरा यह संकल्प।
भगवती गंगा प्रसन्न हुई, देख के उनका भयंकर तप।।६।।
भगवती बोली भगीरथ से, मैं बड़े वेग में आऊँगी।
यदि मेरे वेग को न कोई धारे, रसातल में चली जाऊँगी।।७।।
भगीरथ के तप से खुश होकर, शङ्कर जी ने स्वीकार किया।
गंगा जी के वेग को शङ्कर जी ने जटाओं में धार लिया।।८।।
वहाँ से लेकर गंगा जी को, भगीरथ जी उस ओर चले।
जहाँ उनके पितरों के शरीर, राख के ढेर थे बने पड़े।।९।।
गंगा जी ने उस भस्मी को अपने जल में डुबाया है।
जिन की गति न हो सकती थी, स्वर्ग उन्होंने पाया है।।१०।।
विष्णु के चरणों से निकली, पावन गङ्गा माता है।
श्रृद्धा से सेवन करने, वाला सब कुछ पा जाता है।।११।।
भगीरथ की वंश परम्परा में, राजा खटवांग ने जन्म लिया।
जीवन की शेष बची, दो घड़ियों में ही जीवन धन्य किया।।१२।।

राजा खटवांग के दीर्घबाहु, और उनके यहाँ रघु आये हैं।
इन के नाम से ही इनके, वंशज रघुवंशी कहलाये हैं।।१३।।
राजा रघु के पुत्र हुए अज, और अज ने दशरथ पाये हैं।
इन के घर तो स्वयं विष्णु, राम रूप में आये हैं।।१४।।
श्री राम अपने संग अपने, अंशों को भी लाये हैं।
जो लक्ष्मण रिपुदमन और, भरत लाल कहलाये हैं।।१५।।
अल्पकाल में विद्या सीखी, सब के मन को हरते हैं।
पिता की आज्ञा में रहकर, राज काज सब करते हैं।।१६।।
राम लखन को विश्वामित्र ऋषि, अपने संग ले जाते हैं।
असुरों का वध करके दोनों, यज्ञों के विघ्न हटाते हैं।।१७।।
राजा जनक के आमन्त्रण पर, ऋषि जनकपुरी में जाते हैं।
राह में राम से शिला बनी, अहिल्या का उद्धार कराते हैं।।१८।।
जब जनक के प्रण को कोई भी, पूरा न कर पाया है।
तब शिव धनुष को तोड़ राम ने, जनक के दु:ख को मिटाया है।।१९।।
सीता ने आकर श्री राम को, जयमाला पहनाई है।
वर दुल्हिन की छवि निरख कर, मिथिला अति हर्षायी है।।२०।।
सारी अयोध्या नगरी में, आनंद ही आनंद छाया है।
हर नर नारी वर दुल्हिन की, छवि निरखने आया है।।२१।।
राम हमारे राजा बने जब, सब के मन में आया है।
तब रानी कैकयी ने, राम को वन भिजवाया है।।२२।।
लखन लाल और सीता भी, राम के संग में जाते हैं।
उनका वियोग न सह पाये, दशरथ मृत्यु को पाते हैं।।२३।।
राम लखन ने वन में जाकर, असुरों को निशाना बनाया है।
अपने इष्ट का दर्शन पाकर, मुनियों का मन हर्षाया है।।२४।।
दशकंधर की भग्निी शूर्पणखा, को कुरूप बनाया है।
जिससे क्रोधित होकर रावण, सीता को हर लाया है।।२५।।

ऋष्यमूक पर्वत पर राम ने, प्यारे हनुमत को पाया है।
कपि सुग्रीव से मैत्री करके, बालि को मार गिराया है।।२६।।
कपि सुग्रीव ने अपनी मैत्री, पूर्ण रूपेण निभाई है।
सीता का पता लगाने को, वानर सेना भिजवाई है।।२७।।
समुद्र पार कर हनुमान जी, लंका पुरी में जाते हैं।
रावण के छोटे भाई से, सीता का पता वो पाते हैं।।२८।।
सीता माँ की अनुमति लेकर, फल खाने को जाते हैं।
मेघनाद ने जब पकड़ा तो, लंका सारी जलाते हैं।।२९।।
लंका से आकर श्री राम को, सीता की कुशल सुनाते हैं।
इधर विभीषण रावण को तज, राम की शरण में आते हैं।।३०।।
अब श्री राम की आज्ञा से, लंका पर करी चढ़ाई है।
वानर सेना ने राक्षस, सेना सब मार गिराई है।।३१।।
तब मेघनाद ने पिता को अपने, बल का भरोसा दिलाया है।
बहुत बड़ी सेना लेकर वह, रण भूमि में आया है।।३२।।
मेघनाद के शक्ति अस्त्र से, लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं।
वैद्य सुषेण के कहने से, हनुमत संजीवनी लाते हैं।।३३।।
वैद्य ने संजीवनी को पाकर, लक्ष्मण का उपचार किया।
लक्ष्मण की मूर्छा दूर हुई, सब ने उन्हें आभार दिया।।३४।।
दिव्य उमंग में भर कर लक्ष्मण, मेघनाद को देते मार।
कुम्भकरण भी आया लड़ने, राम ने कर दिया उस का संहार।।३५।।
अब राम.रावण में युद्ध हुआ, यह तो युद्ध निराला है।
विष्णु जिसको स्वयं मारे, उसको कौन बचाने वाला है।।३६।।
रावण का वध कर श्री राम ने, विभीषण को लंका राज्य दिया।
स्वयं अपनी पत्नि भाई संग, अयोध्या में प्रस्थान किया।।३७।।
चौदह वर्ष की अवधि को, राम ने वन में बिताया है।
अब उनको वापिस पाकर, हर प्राणी हर्षाया है।।३८।।

गुरु वसिष्ठ की आज्ञा से, राम को राज्य दिया गया।
सब से पहले वसिष्ठ जी ने ही, उनके मस्तक पर तिलक किया।।३९।।
राम के राज्य में सब हर्षित थे, दु:खी न था कोई नर नारी।
नहीं था कोई किसी का शत्रु, प्रेम से रहती प्रजा सारी।।४०।।
अब श्री शुकजी परीक्षित को, चन्द्रमा का वंश सुनाते हैं।
ब्रह्मा पुत्र अत्रि के नेत्रों से, चन्द्र उत्पत्ति बताते हैं।।४१।।
चन्द पुत्र बुध कहलाये, बुध के पुत्र पुरूरवा हुए।
पुरूरवा के ही वंश में, परशुराम अवतरित हुए।।४२।।
घमंडी राजा क्षत्रियों का जब, पृथ्वी पे अत्याचार बढ़ा।
इन्होंने इक्कीस बार इस धरा के, क्षत्रियों का संहार करा।।४३।।
पुरूरवा के वंश में ही, राजा नहुष उत्पन्न हुए।
इनके छः बेटों में से, एक ययाति प्रसिद्ध हुए।।४४।।
दैत्यगुरु सुता देवयानी से, इन ययाति का विवाह हुआ।
उन के पुत्र पूरु वंश में ही, परीक्षित तुम्हारा जन्म हुआ।।४५।।
ययाति पुत्र यदु के वंश में ही, श्री कृष्ण का हुआ अवतार।
जब जब धर्म हटा धरती से, आकर उस का हर लिया भार।।४६।।
जब लेते अवतार प्रभु तो, भक्तों को सुख देते हैं।
अपनी दिव्य लीलाओं से, उन के मन को हर लेते हैं।।४७।।
जन्म लिया वसुदेव के घर, देवकी माँ को धन्य किया।
पालन पोषण यशोदा नंद ने, करके जीवन सफल किया।।४८।।
गोप-गोपियों और गऊओं संग, बचपन अपना बिताया है।
अपनी सुन्दर लीलाओं से, उन के मन को रिझाया है।।४९।।
उनके भक्तों को जो सताते, ऐसे शत्रुओं का कर के संहार।
उन सब को आनंद दिया, जिन के कारण यह हुआ अवतार।।५०।।
अनेकों किये विवाह प्रभु ने, जिन से हुई संतान अपार।
उद्धव को दे ज्ञानोपदेश, अपने धाम में गये सिधार।।५१।।

दशम स्कन्ध

यह सुनकर परीक्षित शुकजी से यह निवेदन करते हैं।
श्री कृष्ण चरित्र विस्तार से सुनने की इच्छा हम रखते हैं।।१।।
लेकर के अवतार प्रभु ने जो भी लीलाएँ की हैं।
उन सब का हमें श्रवण करायें, परीक्षित ने विनती की है।।२।।
कौरव सेना समुद्र समान थी, महाभारत का युद्ध अपार।
उनके चरणों का ही ले आश्रय, पांडवों का हो गया उद्धार।।३।।
गर्भ के अंदर अश्वत्थामा अस्त्र से मेरा शरीर जला।
उनके चक्र से रक्षित होकर, इस शरीर का अस्तित्व बचा।।४।।
ऐसे शरणागत वत्सल प्रभु की पावन गाथा सुनायें आप।
मुझ को प्रभु की सुधामयी, लीला कथा का करायें पान।।५।।
सूत जी बोले शौनकादि ऋषियो, जब परीक्षित ने ऐसा कहा।
होकर के हर्षित गुरुवर ने, लीलाएँ सुनाना प्रारम्भ करा।।६।।
कृष्ण-कथा के श्रोता वक्ता, सभी हो जाते हैं पावन।
जैसे देता सब को तार, गंगा का जल मन भावन।।७।।
दैत्यों से आक्रान्त धरा ने, गाय रूप को धार लिया।
ब्रह्मा जी की शरण में जाकर, अपने दुःख का बखान किया।।८।।
ब्रह्मा संग देवता मिलकर के, प्रभु से प्रार्थना करते हैं।
आकाशवाणी के द्वारा प्रभु जी, चिन्ता उनकी हरते हैं।।९।।
अपनी योगमाया के संग मैं, धरती पर लूंगा अवतार।
भगवान शेष भी आयेंगे, भाई बलराम के रूप को धार।।१०।।
वसुदेव संग विदा हुई जब, राजा कंस की चचेरी बहन।
इस का आठवाँ गर्भ काल, यह आकाशवाणी न हुई सहन।।११।।
मारने लगा वह देवकी को, वसुदेव जी ने समझाया है।
सारे बच्चे तुझको दूँगा, यह कह आश्वस्त कराया है।।१२।।
वसुदेव नहीं झूठ बोलते, कंस इस बात से था अवगत।

देवकी बहन को छोड़ दिया, और मान ली उन की शर्त।।१३।।
पर देवर्षि के समझाने पर, दोनों को दिया जेल में डाल।
मन में समझने लगा वह मूर्ख, वश में कर लिया मैंने काल।।१४।।
वसुदेव के छः पुत्रों को, क्रूर कंस ने मारा है।
सांतवे गर्भ को प्रभु की युक्ति से रोहिणी ने धारा है।।१५।।
आठवें पुत्र के रूप में गर्भ में स्वंय ही आये पालनहार।
देवों संग स्तुति की ब्रह्मा ने, प्रभु जी हर लो धरा का भार।।१६।।
नक्षत्र रोहिणी समय सुहाना, अष्टमी तिथि और आधी रात।
अद्भुत बालक प्रकट हुआ, चारों ओर छाया प्रकाश।।१७।।
रोम-रोम पुलकायमान, वसुदेव के मन में हर्ष अपार।
आँखों में हैं खुशी के आँसू , देवकी माँ रही छवि निहार।।१८।।
प्रभु से प्रेरित वसुदेव जी, गोकुल में उन्हें ले आये।
बेड़ी हथकड़ियाँ और ताले, कोई न रोक उन्हें पाये।।१९।।
योगमाया की प्रेरणा पाकर, गोकुल वासी सभी थे अचेत।
बालक लिटाया कन्या उठाई, यशोदा भी न सकी यह देख।।२०।।
वसुदेव के लौट आने पर, ताले हो गये फिर से बन्द।
कन्या को गोदी में लेकर, देवकी माँ को मिला आनन्द।।२१।।
उस कन्या के रुदन को सुनकर, द्वारपाल गये कंस के पास।
अपने काल की खबर को पाकर, कंस के उड़ गये होश हवास।।२२।।
देवकी के हाथों से छीन कर, पत्थर पर उसे दे मारा।
वह तो साधारण कन्या न थी, दुर्गा का रूप उसने घारा।।२३।।
कंस से बोली सुन रे मूर्ख, तेरा काल तो प्रकटा और कहीं।
चाहें जितने यत्न तू करले, बचने वाला तू तो नहीं।।२४।।
यह सुन कंस है घबराया, पूतना ने आस बंधाई है।
बच्चे को विष पान कराके, मारने की युक्ति बताई है।।२५।।

छल से कोई भी जग में प्रभु को, वश में नहीं है कर पाया।
गई थी प्रभु के प्राण लेने को, अपने ही प्राणों को गवाया।।२६।।
श्री कृष्ण की बाल लीलाएँ, मन को मोहित करती हैं।
परीक्षित बोले मुझे सुनाओ, ये मन में आनंद भरती हैं।।२७।।
शकट तोड़ शकटासुर मारा और तृणावृत का किया उद्धार।
दूध पिलाती मैया को मुख में, दिखा दिया सारा संसार।।२८।।
गर्गाचार्य गोकुल आये, रखे उन्होंने इनके नाम।
यशोदा पुत्र कृष्ण कहलाये, रोहिणी पुत्र हुए बलराम।।२९।।
राम श्याम दोनों मिलकर, नित्य नई लीला करते हैं।
नंद यशोदा और गोप-गोपियों के मन को हरते हैं।।३०।।
ग्वालों संग माखन चोरी करके, गोपियों के मन को रिझाते हैं।
मैं तो भक्तों के वश में हूँ , सारे जग को बतलाते हैं।।३१।।
मिट्टी खाई कान्हा ने जब, मैया मारने को आई।
मुख में दिखा दिया सब ब्रह्माण्ड, फिर सुध-बुध उसकी है बिसराई॥३२॥
माँ ने जब ऊखल से बाँधा, यमलार्जुन का तब किया उद्धार।
फलवाली को फल के बदले, टोकरी में दिये रत्न अपार।।३३।।
नित नये उत्पातों को देखकर, गोकुलवासी हुए हैरान।
निर्णय लिया वृन्दावन में ही रहना इसका है समाधान।।३४।।
वृन्दावन जैसा वन और नहीं है जग में कहीं सुन्दर।
ऋतु चाहे कोई भी हो, वह तो सदा रहता सुखकर।।३५।।
शुक जी कहते वृन्दावन के, गोवर्धन कान्हा को भाये।
देख के यमुना जी के पुलिन, राम श्याम अति हरषाये।।३६।।
बंसी बजाते गौएँ चराते, मोहक लीलाएँ करते हैं।
जगत नियन्ता होकर भी, साधारण बालक से लगते हैं।।३७।।
कभी खेलते आँख मिचौनी, कभी बंदरों जैसे उछलते हैं।

वत्सासुर बकासुर अघासुर के, प्राणों को सहज ही हरते हैं।।३८।।
देख के वन-भोजन का दृश्य, ब्रह्मा जब शंका करते हैं।
तो अपना ऐश्वर्य दिखाकर, उनके अज्ञान को हरते हैं।।३९।।
धेनुकासुर को मार के कालिय, नाग का किया कान्हा ने उद्धार।
विषैले यमुना जी के जल की कर दी प्रभु ने निर्मल धार।।४०।।
दावानल से व्रजवासी बचाये, प्रलम्बासुर का किया उद्धार।
वर्षाऋतु और शरद् ऋतु का, आनंद उठाया सबने अपार।।४१।।
कान्हा की वंशी को सुनकर, जड़-चेतन सब सुध-बुध खोते।
गोपियाँ होतीं बड़ी आनन्दित, जब कान्हा के दर्शन होते।।४२।।
कृष्ण को पाने के लिये गोपियों ने कात्यायनी व्रत किया है।
चीर-हरण की लीला करके, उनके अज्ञान को हर लिया है।।४३।।
यज्ञपत्नियों पर करी कृपा, इन्द्र के मान का किया दमन।
गोवर्धन अंगुलि पर धारा, व्रजवासियों का किया रक्षण।।४४।।
स्वर्ग लोक से इन्द्र ने आकर प्रभु से क्षमा-याचना की।
आकर के गोलोक से कामधेनु ने प्रभु की आराधना की।।४५।।
इन सब अद्‌भुत लीलाओं की, व्रजवासी चर्चा करते हैं।
वरुण लोक से नंद जी छुड़ाकर, संदेह प्रभु उन का हरते हैं।।४६।।
यह सब देख के ग्वाल बाल सब, उन्हें ईश्वर रूप समझते हैं।
अपने धाम का दर्श करा के, सखाओं का मान प्रभु रखते हैं।।४७।।
गोपियों का मन निर्मल कर के, उनके संग रास रचाया है।
मान हुआ जब गोपियों को, अपना रूप छिपाया है।।४८।।
प्रभु के विरह में हो गई आकुल, गोपियों ने किया रुदन भारी।
गोपी-गीत वह कहलाया, जिसे गाती है दुनिया सारी।।४९।।
कृष्णमयी जब हुई गोपियाँ, तब प्रभु प्रकट हो जाते हैं।
अपना दर्शन देकर उनकी, सारी व्यथा मिटाते हैं।।५०।।

अनेकों अपने रूप बनाकर, हर गोपी संग करते रास।
चिन्मयी है यह प्रभु की लीला, और कहलाया यह महारास।।५१।।
देवों ने भी महारास के, स्वर्ग से किये सुन्दर दर्शन।
सब प्रभु की बलिहारी जाते और पुष्पों का करते वर्षण।।५२।।
अजगर रूप में आये सुदर्शन, विद्याधर का किया उद्धार।
शंखचूड़ से गोपियाँ बचाई, चूड़ामणि ली उस की उतार।।५३।।
गऊओं और गोपों के संग जब, कान्हा वन में चले जाते।
गोपियों का दिन सारा कटता, महिमा उनकी गाते गाते।।५४।।
अरिष्टासुर ने जब व्रज में आकर, गौओं ग्वालों को डराया है।
शुक जी कहते तब प्रभु ने उस, दुष्ट का किया सफाया है।।५५।।
देवर्षि ने कंस को आकर, सच का ज्ञान कराया है।
कृष्ण नहीं है नंद का नंदन, यह देवकी का जाया है।।५६।।
कृष्ण को अपना काल जानकर, अक्रूर को उस ने बुलाया है।
उत्सव के बहाने मथुरा लाने, उन्हें व्रज में भिजवाया है।।५७।।
अश्व रूप में कंस के सेवक, केशी को मार गिराया है।
व्योमासुर को भी मारा, जो ग्वाला बन कर आया है।।५८।।
श्री कृष्ण के दर्शन पाकर, अक्रूर जी मन में निहाल हुए।
राम श्याम जब चले उन के संग, सब गोपी-ग्वाल बेहाल हुए।।५९।।
मथुरा आकर राम श्याम ने, अपना रंग जमाया है।
अपने दर्शन देकर सबका, जीवन सफल बनाया है।।६०।।
धोबी ने जब अकड़ दिखाई, तो उसका उद्धार किया।
दर्जी ने वस्त्रों को सजाया, उसका है उपकार किया।।६१।।
माली ने पुष्पों के हार पहनाये, वर दे कर उसे निहाल किया।
कंस की सैरन्ध्री कुब्जा को, सुन्दर रूप प्रदान किया।।६२।।
धनुष को तोड़ा कुवलय मारा, अखाड़े में प्रवेश किया।

कंस के सारे पहलवानों को, खेल खेल में अचेत किया।।६३।।
यह सब देख के अपने मन में, कंस है इतना घबराया।
छोड़ सिंहासन ले तलवार, कृष्ण की ओर चला आया।।६४।।
काल रूप श्री कृष्ण का सामना, वह पापी कैसे करता।
प्रभु ने उस को पकड़ा जैसे, गरुड़ साँप को है पकड़ता।।६५।।
केश पकड़कर प्रभु ने उसके, रंगभूमि में दिया गिरा।
उस के ऊपर कूद गये स्वयं, कंस तो गिरते ही जा मरा।।६६।।
प्रभु तो सब के हैं जीवन दाता, कंस का भी उद्धार किया।
जेल से मात-पिता को छुड़ाकर, उन को आनन्द अपार दिया।।६७।।
राम श्याम को पाकर देवकी वसुदेव मन में हर्षाये हैं।
यज्ञोपवीत संस्कार किया, पढ़ने गुरुकुल भिजवाये हैं।।६८।।
गुरुदेव से शिक्षा पाकर, दक्षिणा हेतु विनती की है।
उनके मृत-पुत्र को जिलाकर, करुणा अपार अपनी की है।।६९।।
एक दिन अपने प्यारे सखा, उद्धव को है बुलवाया।
उस के हाथों व्रजवासियों को संदेश है भिजवाया।।७०।।
उद्धव से प्रभु बोले प्यारे, गोपियों का दुःख दूर करो।
मेरे मात-पिता के मन में भी जा के आनन्द भरो।।७१।।
कृष्णमयी गोपियों के दर्शन, कर के उद्धव हुए हैरान।
नंद-यशोदा को तो कृष्ण प्रेम में नहीं था देह का भान।।७२।।
व्रजवासियों की प्रेममयी भक्ति की नहीं थी कोई थाह।
व्रजगोपियों की पद-रज में रहने की की उद्धव ने चाह।।७३।।
करके इशारा इक भंवरे को, गोपियों ने उलाहना सुनाया है।
काले रंग के हर प्राणी को, मन का कपटी बताया है।।७४।।
कई महीने व्रज में रहकर, उद्धव जी मथुरा आये हैं।
भक्ति रंग में रंगा देख उन्हें, प्रभु मन में हर्षाये हैं।।७५।।

उद्धव को अपने संग लेकर, कुब्जा के घर जाते हैं।
अपने किये हुए वादे को, पूर्ण रूप से निभाते हैं।।७६।।
फिर उद्धव बलराम जी के संग, अक्रूर जी के यहाँ जाते हैं।
उन को चाचाजी! कहकर, अपना प्यार लुटाते हैं।।७७।।
अन्तर्यामी होते हुए भी, श्री कृष्ण अक्रूर से कहते हैं।
चाचा जी! पाण्डवों का कुशल मंगल हम जानना चाहते हैं।।७८।।
हस्तिनापुर में जा अक्रूर जी, इस का पता लगाते हैं।
धृतराष्ट्र की भेदपूर्ण नीति है, प्रभु को आके बताते हैं।।७९।।
श्री कृष्ण ने मेरी पुत्रियों, के पति कंस का वध है किया।
यह सूचना पाकर जरासन्ध ने मथुरा को घेर लिया।।८०।।
नभ से सूर्य जैसे चमकते, दो दिव्य रथ पाये हैं।
उन में बैठ के राम और श्याम, जरासन्ध से लड़ने आये हैं।।८१।।
दोनों ने उसकी तेईस अक्षौहिणी, सेना को सहज ही मार दिया।
विजयी होकर मथुरा लौटे, प्रजा ने है सत्कार किया।।८२।।
सत्रह बार जरासन्ध, इतनी ही सेना को लाया है।
पर हर बार मेरे ठाकुर ने युद्ध में उसे हराया है।।८३।।
समुद्र के भीतर द्वारका नगरी, का निर्माण कराया है।
अपने स्वजन सम्बन्धियों को, सुरक्षित वहाँ पहुँचाया है।।८४।।
युद्ध न करके अठ्ठारहवीं बार 'रण छोड़' नाम को पाया है।
कालयवन लड़ने आया मुचुकुन्द से भस्म कराया है।।८५।।
द्वारका में ही रहने लगे, प्रभु द्वारकाधीश कहलाते हैं।
रुक्मिणी ने जब पत्र है भेजा, हर कर उस को लाते हैं।।८६।।
भीष्मक नंदिनी रुक्मिणी से, शिशुपाल करना चाहता था विवाह।
परन्तु रुक्मिणी के मन में, श्री कृष्ण को पाने की ही थी चाह।।८७।।
द्वारका आकर रुक्मिणी जी का, विधिवत पाणिग्रहण किया।

जाम्बवती सत्यभामा आदि से भी प्रभु ने विवाह किया।।८८।।
भौमासुर की जेल में बन्दी, राजकन्यायों का किया उद्धार।
उन को अपनी पत्नी बनाया, भौमासुर का किया संहार।।८९।।
सोलह हजार एक सौ आठ, पत्नियों का प्रभु का परिवार।
सब के दस दस पुत्र हुए, वंश में वृद्धि हुई अपार।।९०।।
अठ्ठारह पुत्र महारथी कहलाये, जिनकी कीर्ति जग में अपार।
सर्वश्रेष्ठ प्रद्युम्न हैं उनमें, जिनमें प्रभु के गुण साकार।।९१।।
विप्रशाप से शापित हो जब, यदुवंश का हुआ संहार।
तब एकमात्र इनके ही प्रपौत्र, वज्रनाभ का बचा परिवार।।९२।।
करूष देश के राजा पौण्ड्रक का भी किया प्रभु ने संहार।
जो प्रभु को नकली बतलाता स्वयं को कहता असली अवतार।।९३।।
मित्र भौमासुर द्विविद वानर का, श्री बलराम ने किया संहार।
परिजनों के भय को दूर किया, और दिया उन्हें हर्ष अपार।।९४।।
देवर्षि एक बार प्रभु की, गृहचर्या देखने जाते हैं।
तो हर रानी के महल में प्रभु का अलग रूप ही पाते हैं।।९५।।
प्रभु की लीला अपरम्पार है, देवर्षि हर्षाते हैं।
नित्यचर्या प्रभु की निरखकर, सब परिजन सुख पाते हैं।।९६।।
पापी जरासन्ध को भीम से, युक्ति द्वारा मरवाया।
फिर विश्वविजयी युधिष्ठिर से, राजसूय यज्ञ करवाया।।९७।।
अग्रपूजा श्री कृष्ण की होगी, जब सब ने एक मत हो कहा।
क्रोधित होकर शिशुपाल ने, अपशब्दों की झड़ी लगादी वहाँ।।९८।।
अपने चक्र सुदर्शन से तब, प्रभु ने किया शिशुपाल उद्धार।
राजसूय यज्ञ पूर्ण हुआ, सब को मिला आनंद अपार।।९९।।
शाल्वराज दन्तवक्त्र विदूरथ, सब का किया प्रभु ने उद्धार।
तीर्थ यात्रा गये बलराम जी, वहाँ सूत को दिया है मार।।१००।।
सूत हत्या के पश्चाताप में, ऋषि बल्वल का वध चाहते हैं।

इस दैत्य का कर संहार, अपराध मुक्त हो जाते हैं।।१०१।।
राजा परीक्षित को फिर शुक जी, प्रभु सखा की कथा सुनाते हैं।
ब्रह्मज्ञानी और जितेन्द्रिय वह, नाम सुदामा बताते हैं।।१०२।।
निर्धन होते हुए भी उनके मन में प्रभु-भक्ति निष्काम।
पत्नि के आग्रह पर पहुँचे मित्र की नगरी द्वारका धाम।।१०३।।
मित्र आगमन की सूचना पाकर, दौड़ के गले लगाया है।
मैत्री-भाव क्या होता है, सारे जग को बतलाया है।।१०४।।
भेंट की दो मुट्ठी चावल से, मित्र को दी संपत्ति विशाल।
जग में स्थापित करी प्रभु ने, मैत्री की एक अनोखी मिसाल।।१०५।।
सर्वग्रास सूर्य के ग्रहण पर, सब कुरुक्षेत्र में आये हैं।
सभी परिजन परस्पर मिलकर, मन में अति हर्षाये हैं।।१०६।।
नंद यशोदा गोप-गोपियाँ, सभी करते प्रभु के दर्शन।
प्रभु के चरण-कमल ही हैं, जीव-मात्र के अवलम्बन।।१०७।।
वसुदेव जी ने कुरुक्षेत्र में, सुन्दर यज्ञ का किया आयोजन।
फिर रामहृद में स्नान किया, विप्रों को दिये वस्त्राभूषण।।१०८।।
देवकी को छः पुत्र लौटाये, दिया उनको आनंद अपार।
मां का अमृतसम दुग्ध-पान कर, उन सब का है हुआ उद्धार।।१०९।।
श्रुतियाँ भी प्रभु के स्वरूप का, नहीं कर सकती हैं वर्णन।
नेति नेति कहकर के, प्रभु-चरणों में करती नमन।।११०।।
सब देवों में कौन बड़े है, जब भृगु जी करते यह परीक्षण।
तब ब्रह्मा शिव ने क्रोध किया, कर के अपशब्दों का श्रवण।।१११।।
तब भृगु ने विष्णु की छाती पर है किया लात-प्रहार।
उन को ही उत्तम पाया जब किया उन्होंने विनम्र व्यवहार।।११२।।
प्रभु की लीला-कथाओं का, नित्य निरन्तर करें श्रवण।
प्रभु-भक्ति मिल जायेगी, छूटेंगे भव के बंधन।।११३।।

एकादश स्कन्ध

धरती का बोझ बने दैत्यों का, श्री कृष्ण ने किया उद्धार।
शेष रूप बलराम ने भी किया कई दैत्यों का संहार।।१।।
निमित्त बना कर पांडवों को भी, दुष्टों को है मरवाया।
उन्मत्त यादव भी बोझ धरा के, यह विचार मन में आया।।२।।
प्रभु की लीला कैसी न्यारी, पार न कोई पाया है।
विप्रशाप से अपने यादव वंश का नाश कराया है।।३।।
देवर्षि ने नौ–योगीश्वर–निमि संवाद सुनाया है।
इसके द्वारा श्री वसुदेव को भागवत–धर्म बताया है।।४।।
अपने धाम में पधारिये भगवन, ब्रह्मा जब विनती करते हैं।
वियोग आपका नहीं सह सकता, उद्धव प्रभु से कहते हैं।।५।।
श्री शुक कहते परीक्षित! प्रभु ने उद्धव को समझाया है।
दत्तात्रेय के चौबीस गुरुओं का उपाख्यान सुनाया है।।६।।
सब योनियों में मानव तन को सर्वश्रेष्ठ बतलाते हैं।
नाशवान इस देही से ही अविनाशी को पाते हैं।।७।।
आदि अन्त और मध्य जगत का स्वयं को प्रभु ने बताया है।
मुझ से भिन्न नहीं है कुछ भी उद्धव को समझाया है।।८।।
सब जीवों में मेरा दर्शन, भागवत धर्म कहलाता है।
अपने कर्मों को समर्पित कर मुझे, वह मुझको पा जाता है।।९।।
प्यारे उद्धव! सब द्वन्द्वों में, अपने को तुम सम रखना।
अब तुम जाओ बदरीवन, मुझ को सदा स्मरण करना।।१०।।
ब्रह्म–शाप से जब सारे यदुवंशियों का हो गया संहार।
प्रभु को हुआ सन्तोष धरा का उतर, गया अब सारा भार।।११।।
व्याध–बाण को निमित्त बना कर प्रभु ने किया स्वधाम गमन।
ऐसे लीला पुरुषोत्तम प्रभु के चरणों में हमारा नमन।।१२।।

द्वादश स्कन्ध

प्रभु के परमधाम जाते ही कलियुग पृथ्वी पर आया है।
इस युग के हर प्राणी को कपट-दम्भ ही भाया है।।१।।
शुक जी बोले सुनो परीक्षित, कलियुग है दोषों की खान।
पर नाम संकीर्तन तारेगा, इस युग का यह गुण है महान।।२।।
देकर यह उपदेश श्री शुक जी, विदा वहाँ से हो जाते हैं।
तक्षक के डस लेने पर, परीक्षित परम-पद पाते हैं।।३।।
सूत जी बोले शौनकादि ऋषियों, वही परम-पद पाता है।
जो अहंता ममता तज प्रभु चरणों में ध्यान लगाता है।।४।।
श्रीमद्भागवत महापुराण है, सारे उपनिषदों का सार।
इसका आश्रय लेने वाला, निश्चित होता भव से पार।।५।।

।।हरिः ॐ तत्सत्।।



आरती भागवत धारा

श्री भागवत भगवान की है आरती
पापियों को पाप से है तारती
श्री भागवत भगवान की है आरती
ये अमर ग्रंथ ये मुक्ति पंथ में पंचम वेद निराला
नव ज्योति जगाने वाला
हरि नाम यही हरि धाम यही जग के मंगल की आरती
पापियों को पाप से है तारती
ये शान्ति गीत, पावन पुनीत, पापों को मिटाने वाला
हरि दर्श कराने वाला
ये सुख करनी, ये दुःख हरनी, श्री मधुसूदन की आरती
पापियों को पाप से है तारती
ये मधुर बोल सत्पंथ खोल सन्मार्ग दिखाने वाला
बिगड़ी को बनाने वाला
श्री राम यही घनश्याम यही प्रभु की महिमा की आरती
पापियों को पाप से है तारती
श्री भागवत भगवान की है आरती
पापियों को पाप से है तारती।



भजन

राम रस मीठा रे, कोई पीवै साधु सुजाण।
सदा रस पीवै प्रेमसूँ सो अबिनासी प्राण ।।टेक।।
इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा-बिसनु-महेस।
सुर नर साधू संत जन, सो रस पीवै सेस॥ १॥
सिध साधक जोगी-जती, सती सबै सुखदेव।
पीवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेव॥२॥
इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास।
पिवत कबीरा ना थाक्या, अजहूँ प्रेम पियास॥३॥
यह रस मीठा जिन पिया, सो रस ही मांहि समाइ।
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अनत न जाइ॥ ४॥

जो तुम तोरौ राम मैं नाहिं तोरौं।
तुमसे तोरि कवन से जोरौं।। टेक।।
तीरथ बरत न करौं अंदेसा।
तुम्हरे चरन कमल को भरोसा।। १।।
जहँ तहँ जाऊँ तुम्हरी पूजा।
तुमसा देव और नहिं दूजा ।।२।।
मैं अपनो मन हरि सों जोर्‌यों
हरि सों जोरि सबन सों तोरयों।। ३।।
सबही पहर तुम्हारी आसा।
मन क्रम वचन कहै रैदासा।। ४।।

ना वह रीझै जप तप कीन्हे, ना आतम का जारे।
ना वह रीझै धोती टाँगे, ना काया के पखाँरे।।

दाया करै धरम मन राखै, घर में रहे उदासी।
अपना-सा दुख सब का जानै, ताहि मिलै अबिनासी।
सहै कुसब्द बादहूँ त्यागै, छाँड़े गरब गुमाना।
यही रीझ मेरे निरंकार की, कहत मलूक दिवाना।।

माता पिता भाई बन्धु सखा वो हमारा है
कृष्ण नाम प्यारा है, गोपाल नाम प्यारा है
नाम प्रभु का जर्रे-जर्रे में समाया है
महिमा अपार पार कोई न पाया है
पत्ता-पत्ता डाली-डाली करते इशारा है
कृष्ण नाम प्यारा है, गोपाल नाम प्यारा है
चारों युगों में कलिकाल ही महान है
इसमें प्रभु नाम की महिमा प्रधान है
तोता मैना पक्षियों ने नाम ये पुकारा है
कृष्ण नाम प्यारा है, गोपाल नाम प्यारा है
कृष्ण-कृष्ण नाम की जो रटना लगायेगा।
नाम के सहारे भव से पार हो जायेगा।
कृष्ण नाम गाते-गाते झूमे जग सारा है
कृष्ण नाम प्यारा है, गोपाल नाम प्यारा है
नाम के सहारे ब्रह्मा सृष्टि को बनाते है
समाधि में बैठ शङ्कर नाम को ही ध्याते है
नाम से प्रकाश लेते सूरज चाँद तारा है
कृष्ण नाम प्यारा है, गोपाल नाम प्यारा है।

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।।

रचयिता परिचय



डा० श्रीमती निर्मल बांगा "राघव किकंरी" का जन्म 2 जून 1945 को स्यालकोट (वर्तमान में पाकिस्तान) में हुआ। इनके पिता श्री बनारसी दास सचदेव एवं माता श्रीमती प्रकाशवंती थी। आपकी समस्त शिक्षा सहारनपुर में हुई। बी.ए., बी.एड. के पश्चात् आपने दो विषयों हिन्दी एवं संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा के प्रति आपकी जिज्ञासा यही समाप्त नहीं हुई। तत्पश्चात् आपने महान सन्त एवं योगी बाबा लाल दयाल जी के विषय में डा० ओम प्रकाश दीक्षित जी के सान्निध्य में शोध किया। आपके शोध ग्रन्थ **"सन्त कवि बाबा लाल दास जीवनी और वाणी"** के लिए आपको चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा डाक्टरेट की उपाधि दी गयी। पठन पाठन और अध्ययन आपकी अभिरूचि ही नहीं अपितु आपके जीवन का प्रतिबिम्ब है। सहारनपुर में एस० डी० कन्या इण्टर कॉलेज में अध्यापिका के पद पर कार्य प्रारम्भ करके आप प्रधानाचार्य पद से वर्ष 2003 में सेवानिवृत्त हुई। आपने पूर्व में सम्पूर्ण भागवद् महाग्रन्थ का गेय शैली में अनुवाद करके हिन्दी जगत के पुरोधाओं को चकित कर दिया। वह पुस्तक **"भागवत रसामृत"** के रूप में प्रकाशित हुई है। बाल्यकाल से ही आपकी तुलसी के रामचरितमानस के प्रति अपार निष्ठा रही है। मानस की चौपाइयों का गायन आपकी दिनचर्या का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग रहा है।

भागवद् महापुराण को संक्षिप्त रूप में भागवत प्रेमी जनों को उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से यह पुस्तक भागवत–धारा के नाम से जिज्ञासु भक्त जनों के कर–कमलों में समर्पित की गई है।

राजेश कपूर एडवोकेट
सहारनपुर